manorangan_page 1 26/11/2024 11:34 AM Page 1

सभी देशवासीयों को संविधान दिवस की हार्दिक शुभकामनाएं

सभी देशवासीयों को संविधान दिवस की हार्दिक शुभकामनाएं
प्रधानाचार्य
वीरेन्द्र सिंह
के. डी. एम जूनियर हाई स्कूल(गढ़मुक्तेश्वर)हापुड़

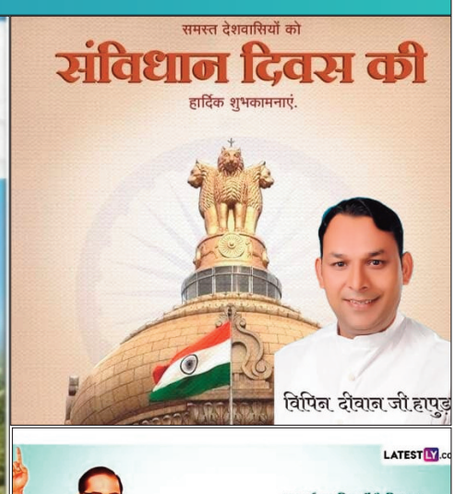

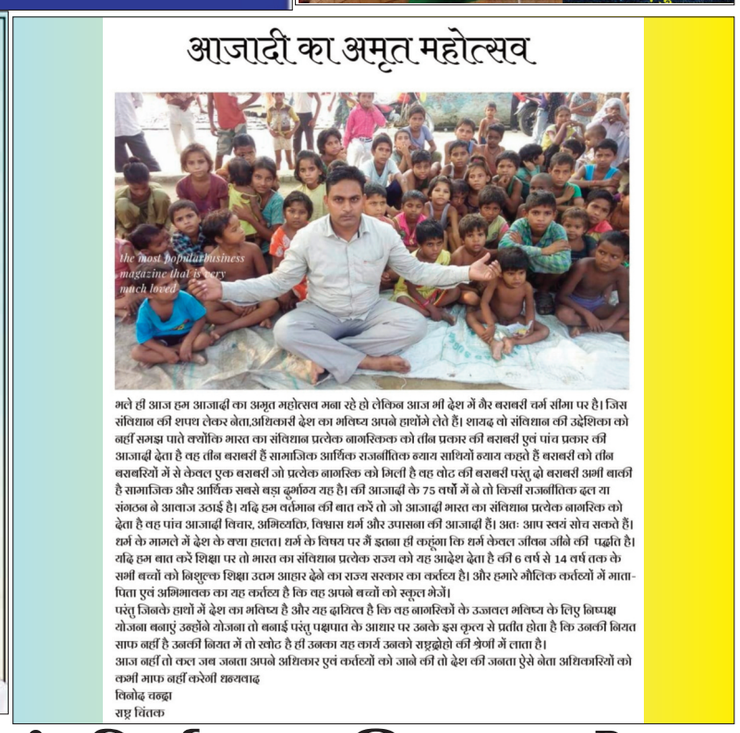

राशन बनाम शासन

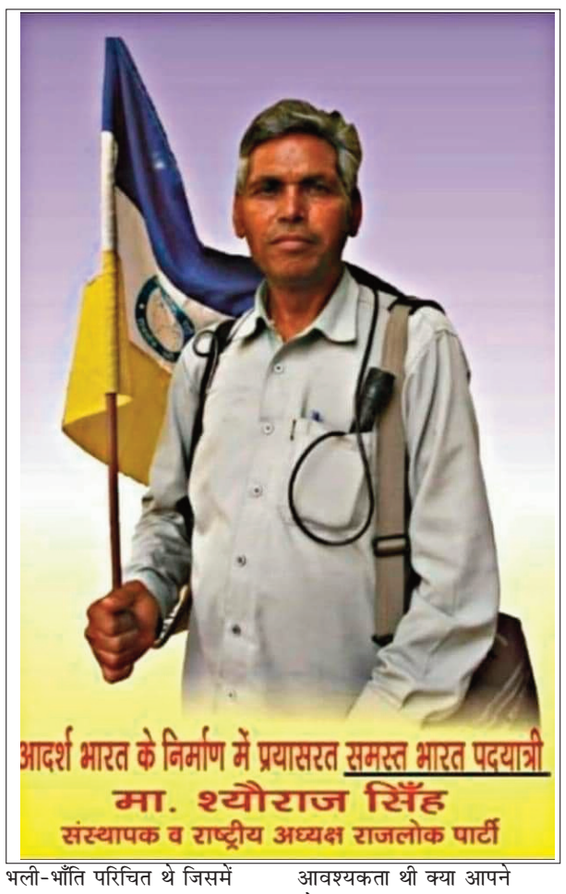

भारत एक प्राकृतिक संसाधनों से परिपूर्ण राष्ट्र है जहां प्राकृतिक सम्पदा के असीमित पर्याप्त भंडार हैं किन्तु अतीत से ही अनैतिकता व भेद-भाव पूर्ण धार्मिक मान्यताओं के अनुसार अमानवीयता व अनैतिकता पर आधारित प्रबन्धन के द्वारा प्राकृतिक व आर्थिक संसाधनों पर जैसे धन, धरती, व्यापार तथा रोजगार पर विकृत मानसिकता के द्वारा सदैव निकृष्ट, भ्रष्ट तथा चतुर व चालाक लोगों ने ही अपना प्रभुत्व कायम रखा है। जिनके लिए व्यक्तिगत हित ही सर्वोपिर थे जिनकी दृष्टि में राष्ट्र, राष्ट्रीयता, मानवता, नैतिकता जैसे शब्द शोषण कर्ताओं की जमात के शब्दकोश में ही नही थे जिसके परिणामस्वरूप एक अल्पवर्ग अत्यधिक साधन सम्पन्न, सुख सुविधाओं से युक्त विलासितापूर्ण जीवन यापन करता था दूसरा मेहनतकश बहुसंख्यक शूद्र वर्ग वृहद बड़ा वर्ग साधनहीनता के न्यूनतम स्तर पर जीवन यापन करता था जिसको न तो खाने को भोजन था न ही पहनने को कपडा और नही रहने को मकान। जो जीवित रहने के लिए मृत पशु का मांस खाकर, गोबर से निकला अनाज खाकर या दूसरो के यहाँ से बचा हुआ भोजन माँगकर खाकर अपनी जीवन यापन करता था। जिस पर पहनने को कपड़ा नही होता था उतरन मांग कर पहनता था। मकान के नाम पर सिर्फ फूँस की बनी झोपड़ियां ही होती थी। पहले तो बैठने को चारपाई ही नही होती थी यदि किसी के पास थी भी तो चारपाई पर बैठने की आजादी नही थी। पीने को साफ पानी की व्यवस्था नही थी, रास्तों पर भी चलने की स्वतन्त्रता नही थी ऐसी विषम परिस्थिति में बाबासाहेब डॉ.अंबेडकर जी ने समानता के लिए कार्य करना आरम्भ किया। जो महात्मा ज्योतिबा फूले जी के उस सूत्र से भली-भाँति परिचित थे जिसमें बताया था कि,
₹शिक्षा के अभाव में बुद्धि गयी, बुद्धि के अभाव में नीति, नीति के अभाव में गति और गति के अभाव में धन गया तथा धन के अभाव में शूद्र निर्धन,दरिद्र व गुलाम हुए।₹ इस सब अनर्थ का एकमात्र कारण अशिक्षा ही थी। तब आपने कहा कि, ₹ इस अज्ञानता रूपी पेड को ज्ञान रूप कुल्हाड़ी काटेगी अवश्य लेकिन धीरे-धीरे।₹
बाबासाहेब डॉ.अंबेडकर जी ने दूरदृष्टिपूर्ण दृष्टिकोण को दृष्टिगत रखकर जिन देशवासियों को जीवन यापन करने के लिए सबसे पहले भोजन की आवश्यकता थी क्या आपने भोजन की व्यवस्था की ? नही,तो क्यो? क्योकि जीवनयापन करना ही महत्वपूर्ण नही है बल्कि स्वाभिमान के साथ सम्मानित जीवन यापन करना अधिक महत्वपूर्ण है। यदि पेट भरना ही जीवन है तो पेट तो हम पहले भी भर ही रहे थे इस प्रकार तो डॉ.अंबेडकर जी द्वारा राष्ट्र के प्रत्येक नागरिक के हित में किया गया आजीवन संघर्ष ही निरर्थक हो जायेगा क्यो? क्योकि आप यह भली भाँति समझते थे कि,
₹सम्मान के बिना मात्र पेट भरकर जीवन यापन करना भी पशु के समकक्ष जीवन यापन करना ही होता है।₹
इसलिए आपने जीवन यापन करने के लिए परम आवश्यक पेट भरने के लिए भोजन, पीने को पानी, पहनने को कपडा,रहने को मकान आदि की व्यवस्था करने से पहले शिक्षित बनाने के लिए सदियों से बन्द स्कूल,विद्यालय,विश्वविद्यालय के शिक्षा के लिए दरवाजे खोले, फीस के धन नही था, फीस मॉफी की व्यवस्था की, किताब व कापी की व्यवस्था नही थी तो छात्रवृति की व्यवस्था की, विद्यालय व विश्वविद्यालय में पढ़ने के लिए शहरो में ठहरने की व्यव्स्था नही थी जिससे शहरों में जाकर रहकर शिक्षा ग्रहण कर सके, इसलिए कालिज और विश्वविद्यालयों में छात्रावास की व्यवस्था की जिससे आप शहरों में छात्रावास में रहकर शिक्षा ग्रहण करके शिक्षित बन सकें और शिक्षित होने के बाद भी आपको कोई भी व्यक्ति रोजगार/ नौकरी नही देगा इसके लिए SC,ST के छात्र व छात्राओ के लिए सरकारी नौकरियों में आरक्षण की व्यव्स्था की जिससे आप स्वाभिमान के साथ सम्मानित जीवन यापन कर सकें तथा अपने अधिकारों के महत्व को समझ सकें और सम्मान जनक जीवन यापन करने के लिए अपने अधिकारों का संरक्षण कर सकें। किंतु अफसोसजनक तो यह है कि आज शासन द्वारा राशन दिया जा रहा है और देश की जनता भी राशन के बदले शासन सोंप रही है, क्यो ? क्योकि शिक्षित होकर आरक्षण के द्वारा अधिकारी व कर्मचारी बनकर सम्मान जनक आर्थिक सम्पन्नता का जीवन यापन व उपयोग तो कर रहे हैं किन्तु जब शिक्षा तथा आरक्षण के अधिकार को बचाने के विचार पर चिंतन व चर्चा करते हैं तो अधिकारी कहता है मैं तो अधिकारी हूँ कोई सहयोग नही कर सकता। धर्माचारी कहता है कि हमारा राजनीति से कोई लेना देना नही है। जब अधिकारों को हड़पने वाले राजनेता,राजनैतिक दल,अधिकारी,व्यापारी,कर्मचारी तथा धर्मांचारी सभी एकजुट होकर शिक्षा, समता,स्वतन्त्रता, रोजगार,आरक्षण तथा आर्थिक सभी संवैधानिक अधिकारों को समाप्त करने को प्रयासरत हैं। एक उदाहरणः आम का वृक्ष भी अधिकतम सौ वर्ष तक ही फल की फसल देता है और बाबासाहेब डॉ.अंबेडकर जी द्वारा बोई गयी संवैधानिक अधिकारों के फल की फसल को हम पचहत्तर वर्षो से काट रहे हैं। जैसे कि एक बार बोई गयी फसल सदैव नही काटी जाती बलकि निश्चित समय अन्तराल पर पुनः बोनी पडती है इसी प्रकार संवैधानिक वृक्ष को शिक्षा से वंचित करके अब नष्ट किया जा रहा है। यदि SC, ST OBC & MINORITY के लोगों को तथा देश की आधी आबादी महिलाओ को उनके अधिकारों के प्रति जागरूक करके भारत के संविधान को नही बचाया गया और राशन में ही शासन [सत्ता] को विकृत मानसिकता से ग्रस्त राष्ट्र,राष्ट्रीयता,मानवता, नैतिकता व संवैधानिकता के विरोधी राजनैतिक दल तथा राजनेताओं को सत्तासीन करायेंगे तो निश्चित ही वह अतीत की तरह आने वाली पीढियों व महिलाओं को अशिक्षित,बेरोजगार तथा अधिकार विहीन बनाकर पुनः पशुवत जीवन यापन करने को बाध्य कर देंगे।₹
यदि उचित और आवश्यक समझें तो भावी पीढ़ी के भविष्य को दृष्टिगत रखकर राष्ट्रहित में आत्मचिंतन करने पर विचार कर सकते हैं।

आदरसहित आपका साभारी
श्यौराज सिंह
पदयात्री समस्त भारत

संकीर्ण मानसिकता के दुष्परिणाम !! "एक चिंतन

मेरे प्यारे भारतवासी भाइयों, बहनों, नौजवान साथियो, छात्र व छात्राओं, हम राष्ट्र के सभी शिक्षित, सभ्य, विवेकशील, बुद्धिजीवी, चिंतनशील, जागरूक, अपने व अपनी भावी पीढियों तथा राष्ट्र के उज्जवल भविष्य के निर्माण को समर्पित व संकल्पित नौजवानों व नागरिकों से राष्ट्रहित में ध्यानाकर्षित करने की अपेक्षा करते हैं। विशेष चिन्तन का विषय यह है कि, ₹लोकतांत्रिक व्यवस्था में जिसकी संख्या सबसे कम है वही शासन, प्रशासन, न्याय- व्यवस्था, भौतिक, आर्थिक तथा प्राकृतिक संसाधनों पर तथा राजनीति में भी अपना वर्चस्व स्थापित किये हुए है कैसे ? क्या इस समस्या पर समग्र चिंतन करके स्थायी समाधान खोजने की महती आवश्यकता नही है ? कि इसके कारण क्या हैं ? और इन्हें कैसे दूर किया जा सकता है ?₹ इसका मुख्य कारण है कि ब्राह्मणवादी वर्ग एक प्रतिशत घर से बाहर रहकर निरन्तर भेद-भाव, ऊँच-नीच व विषमतापूर्ण जाति व्यवस्था को सदैव मजबूत करता रहता है तथा SC.ST & OBC के लोगों को गुमराह करके आपस में लडाने का षडयंत्र भी रचता रहता है क्योंकि वह जानता है कि,
₹ SC.ST.OBC को आपस में लड़ाकर ही इनके प्राकृतिक, संवैधानिक मौलिक तथा नैतिक अधिकारों को निरन्तर हड़पा जा सकता हैं।₹
इसके लिए वह सामान्य वर्ग को समझाता है, जगाता है अथवा उनको जागरूक करता है और इसके साथ ही SC.ST & OBC के लोगों को गुमराह करके पूजा, पाठ, हवन, वृत, कॉवड, धार्मिक कर्मकाण्ड, सुन्दरकॉड पाठ, रामचरित मानस का पाठ, देवी जागरण, रामलीला, रासलीला, नवरात्री पूजा, गणेश चौथ, मन्दिरों पर मेला, काल्पनिक तथा पाखंडवाद का प्रचार-प्रसार,भाग्य, भगवान,आत्मा, परमात्मा, स्वर्ग,नर्क, पुनर्जन्म, मोक्ष, चौरासी लाख यौनी, कुम्भ व अर्धकुम्भ तथा धार्मिक उन्माद फैलाने वाले कार्यो में उलझाकर रखता है तथा मानवीय नेतृत्व के स्थान पर सजातीय नेतृत्व जैसे तथ्यहीन, अर्थहीन, तर्कहीन, दिशाहीन व उद्देश्यहीन विवादों को जन्म देकर सदैव ही इनका समय तथा धन को नष्ट कराने का काम निरन्तर योजना बद्ध तरीके से करता रहता है तथा यह भी उनके षडयंत्र में फंसकर आपस में ही एक दूसरे के साथ विरोधाभासी विवादों में उलझा रहता है। जबकि वह सभी के घर-परिवार में निरन्तर सम्पर्क बनाने को सदैव प्रयासरत रहता है, वह सभी के पास बैठकर खाना भी खाता हैं और अन्य सभी जातियों के मध्य में ऊँच-नीच तथा भेद-भाव की भावना विकसित करने वाले घृणास्पद बिन्दुओं के बीजों का बीजारोपण भी करता रहता है।
जबकि, ₹Sc.St & Obc के कुछ स्वार्थी, दिशाहीन व उद्देश्यहीन राजनेता व समाजसेवी उनके सहयोग से ही, उन्ही के दिशा निर्देश पर , दिशाहीन व उद्देश्यहीन आंदोलनों के द्वारा SC.ST.OBC की मानसिक शक्ति [Brain Power], शारीरिक शक्ति [Mussel Power] और धन की शक्ति [Money Power] को दिशाहीन व उद्देश्यहीन आंदोलनों के माध्यम से नष्ट कराने के लिए उन्ही के द्वारा तैयार की गयी षडयंत्रकारी पृष्ठभूमि के अनुरूप उनको सत्तासीन कराने तथा राजनैतिक लाभ पहुचाने के लिए व्यक्तिगत, परिवारिक व आर्थिक लाभ के साथ-साथ सस्ती व शीघ्र लोकप्रियता के लिए कार्य करते देखे जा सकते हैं।₹
वर्तमान मे ऐसे अनेक उदाहरण उपलब्ध हैं जिसका दुष्परिणाम SC.ST. OBC का बड़ा वर्ग तथा देश की आधी आबादी महिलाओं के साथ अमानवीय,अनैतिकतापूर्ण तथा अन्यायपूर्ण, असंवैधानिक, घृणित, जघन्य, वीभत्स, भयावह, क्रूरतम, बलात्कारियों के रूप में तथा सत्तासीनो को अपराधियों का समर्थन व संरक्षण करते देखा जा सकता है। ₹ब्राह्मणवाद का एक मात्र उद्देश्य Sc.St.Obc & Minorities के विवेकशील लोगों का ध्यान उनके संवैधानिक अधिकारों से भटकाना ही होता है जिससे वह आपको वर्तमान शोषण और अत्याचार पर ही उलझाकर रख सकें और वह आपके ही दिशाहीन व उद्देश्यहीन राजनेताओं के सहयोग से सत्तासीन होकर राष्ट्र के बहुसंख्यक SC ST.OBC & MINORITY व देश की आधी आबादी महिलाओं तथा निर्धनों के संवैधानिक अधिकारों को समाप्त कर सकें, जैसा कि अतीत व वर्तमान में भी स्पष्टतः देखा जा सकता है।₹ हम राष्ट्र के बहुसंख्यक नागरिक तथा देश की आधी आबादी महिलाओं से विनम्रता पूर्वक अपने आने वाली भावी पीढियों के भविष्य को दृष्टिगत रखकर गम्भीरतापूर्वक चिंतन करने की आशा करते हैं।
इसी आशा और विश्वास के साथ!
राष्ट्र व जनहित में प्रेषित ! जय भारत ! विजय भारत !!

आदरसहित आपका साभारी
सुरेंद्रपाल सिंह
राष्ट्रचिंतक, राष्ट्रप्रेमी, मानवतावादी तथा राष्ट्रीय महासचिव राजलोक पार्टी